

पहला भाग करवा हुए 20 जापर म गपलाया क जाग 27.4 जापर म कामरपर गरया राभा म प्सा

सेमिनार में जैव-ऊर्जा के लिए संसाधनों की योजना और अनुकूलन पर हुई चर्चा

दैनिक कानपुर उजाला

कानपुर। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में जैव-ऊर्जा के लिए संसाधनों की योजना और अनुकूलन पर एक अखिल भारतीय सेमिनार का आयोजन राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, एशियन एसोसिएशन ऑफ शुगर केन टेक्नोलॉजिस्ट्स लखनऊ और स्प्रे इंजीनियरिंग डिवाइसेज लिमिटेड चंडीगढ़ के तत्वावधान में किया



गया। कार्यक्रम की शुरुआत संस्थान के निदेशक प्रोफेसर डी0 स्वाईन और मंच पर उपस्थित अन्य गणमान्य व्यक्तियों द्वारा दीप प्रज्वलन और मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण के साथ की गई। सेमिनार को संबोधित करते हुए निदेशक प्रो0 डी0 स्वाईन ने कहा कि केवल चीनी उद्योग से प्राप्त फीडस्टॉक और अनाज का उपयोग करके पेट्रोल में लक्षित 20 प्रतिशत इथेनॉल मिश्रण 2025 तक प्राप्त नहीं किया जा सकता है। निर्धारित मात्रा में इथेनॉल की आवश्यकता की पूर्ति हेतु गैर-खाद्य फीडस्टॉक से

इथेनॉल उत्पादन पर जोर देना होगा जो कि भोजन बनाम ईंधन संघर्ष से भी बचाता है। उन्होंने सफेद चीनी की जगह कच्ची चीनी के उत्पादन पर भी जोर दिया, जो न केवल मानव उपभोग के लिए स्वास्थ्यप्रद है बल्कि उसके उत्पादन प्रक्रिया में आने वाली लागत भी कफायती है। प्रो0 स्वाईन ने कहा कि चीनी उद्योग को चीनी की मांग और आपूर्ति को संतुलित करने और जैव-आधारित उत्पादों और हरित प्रौद्योगिकियों के लिए एक आशाजनक केंद्र के रूप में उभरने की दिशा में तत्पर रहना

होगा। सेमिनार में एस के त्रिवेदी, अशोक गर्ग, संजय चौहान, विनय कुमार, डॉ0 आर अनंतालक्ष्मी, डॉ0 अशोक कुमार, वीरेंद्र कुमार, डॉ0 सुधाशु मोहन, महेंद्र यादव, वीपी सिंह, श्री के कोडे, ए के नंदा, श्री अमर सिंह और अमित नेगी आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम के संयोजक एवं सहायक आचार्य शर्करा अभियांत्रिकी, अनूप कुमार कर्नौलिया द्वारा दी गई समापन टिप्पणी के साथ सेमिनार का समापन हुआ। एसोसिएशन के महासचिव, पीकेएन सिंह ने प्रतिभागियों को धन्यवाद ज्ञापित किया।

The Pioneer

Seminar on optimisation of resources for bioenergy

PIONEER NEWS SERVICE ■ KANPUR

An all India seminar on "Planning and Optimisation of Resources for Bioenergy" was organized at National Sugar Institute here on Tuesday. The event was jointly organised by National Sugar Institute (NSI), Kanpur, The Asian Association of Sugar Cane Technologists, Lucknow, and Spray Engineering Devices Limited, Chandigarh.

Executive presidents, chief executive officers, general managers and senior level officials of sugar factories and distillery units located in major sugar producing states of India participated in this seminar. In the inaugural session of the seminar, Director of NSI, Professor D Swain, Director General of Vasantdada Sugar Institute Sambhaji K Patil, Professor and Head Biochemistry Department Dr Seema Paroha, President of The Asian Association of Sugar Cane Technologists KP Singh, Chairman and Managing Director of Spray Engineering Devices Ltd Vivek Verma and



A seminar on "Planning and Optimisation of Resources for Bioenergy" was organised at NSI Kanpur on Tuesday.

Secretary General of The Asian Association of Sugar Cane Technologists PKN Singh shared the dais. The programme was started with lighting the lamp and garlanding of Maa Saraswati by the Director of the Institute Prof D Swain and other dignitaries present on the dais. While addressing the seminar, Prof Swain said that merely by using feedstocks from the sugar industry and grains, the targeted 20 per cent ethanol blending in petrol may not be achieved by 2025 and non-food feedstocks may be

developed for ethanol production to cope up with the blending requirements, which also avoid food vs fuel conflict. He emphasised on production of raw sugar over plantation of white sugar which is not only healthier for human consumption but also a cost economical process. He also said that sugar industry has to look forward towards balancing sugar demand-supply equilibrium and to emerge as a promising hub for bio-based products and green technologies.

During his welcome

remarks, President of Association KP Singh, told about the relevance and importance of the theme of the seminar with the current scenario of sugar and its allied sector. Director General Vasantdada Sugar Institute Sambhaji K Patil, said that sugar industry which is a hub for production of clean, green and renewable energy can be a potential source of green hydrogen a fuel for the future. Professor and Head Biochemistry Department, Dr Seema Paroha, said the commercial proven technologies such as utilisation of filter cake for production of bio-gas/CBG to the extent of about two million metric tonnes per annum may prove to be a tool for producing bio-energy and adding value to the revenue pot of the sugar factories, which is also need of the hour. Chairman and Managing Director SEDL, Vivek Verma explained efficient utilisation of bio-mass for ethanol, fertiliser, bio-degradable polymers, organic chemicals etc rather than burning it into the boiler and emphasised on the possi-

ibilities for implementing MVR technologies as replacement of boiler in the sugar and grain based distillery units. Secretary General of Association PKN Singh delivered a vote of thanks. Seven abstract research papers were presented in the seminar on the topics related to the latest development and opportunities in Indian sugar industry for energy efficiency in both the aspects electrical and thermal energy as well, potential of green hydrogen from the sugar industry, supply chain and process parameter optimisation, viability of natural crystal sugar and bio-based sustainable economy.

SK Trivedi, Ashok Garg, Sanjay Chauthan, Vinay Kumar, Dr. R. Ananthalakshmi, Dr. Ashok Kumar, Virendra Kumar, Dr. Sudhashu Mohan, Mahendra Yadav, VP Singh, K Konde, AK Nanda, Amar Singh and Amir Negi etc were present in the seminar. It ended with concluding remarks given by the convener of the programme and Assistant Professor of Sugar Engineering, Anoop Kumar Kanaujia.

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में सेमिनार का हुआ आयोजन

कानपुर

कानपुर । राष्ट्रीय शर्करा संस्थान कानपुर में जैव-ऊर्जा के लिए संसाधनों की योजना और अनुकूलन विषय पर एक अखिल भारतीय सेमिनार का आयोजन संस्थान के प्रशिक्षण केंद्र 'शर्करा सोध' में आयोजित हुआ यह कार्यक्रम संयुक्त रूप से राष्ट्रीय शर्करा संस्थान कानपुर एफएमएस एसीएसएन और सुगर केन टेक्नोलॉजिस्ट्स लखनऊ और एफ डी इंजीनियरिंग डिवाइसिंग लिमिटेड के सहयोग से आयोजित किया गया कार्यक्रम को मुख्यालय संस्थान के निदेशक प्रोफेसर डी. स्वाइन और मंच पर उपस्थित अन्य गणमान्य व्यक्तियों द्वारा दीप प्र燃शन और मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण के साथ की गई इस सेमिनार में भाग के प्रमुख चीनी उत्पादक इन्फोर्मि और अक्सरनी इकाइयों में कार्यरत कर्मचारी अध्यक्ष, मुख्य कार्यकारी अधिकारियों, महाप्रबंधकों और



वर्षा सर के अधिकारियों ने धन विषय सेमिनार के उद्घाटन पर में राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के निदेशक प्रोफेसर डी. स्वाइन, वरसं दत्त सुगर इंडस्ट्रीज के महाप्रबंधक संभागी के पाटिल, प्रोफेसर एवं जैव रसायन विभाग प्रमुख डॉ. सीमा परेश, एफएमएस एसीएसएन और सुगर केन टेक्नोलॉजिस्ट के अध्यक्ष कपी सिंह, एफ डी इंजीनियरिंग डिवाइसिंग लिमिटेड के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक दिवेक वर्मा और एफएमएस एसीएसएन और सुगर केन टेक्नोलॉजिस्ट के महाप्रबंधक पीकेएस सिंह ने संबं धित किया। सेमिनार को संबोधित करते हुए

निदेशक, प्रोफेसर डी. स्वाइन ने कहा कि केवल चीनी उद्योग से प्राप्त फीडबैक और अनाज का उपयोग करके, पैटिल में लक्षित 20% इन्फोर्मि मिशन 2025 तक प्राप्त नहीं किया जा सकता है निर्धारित मात्रा में इंधनता को आवश्यकता को पूर्ण हेतु गैर-खाद्य फीडबैक से इंधनता उत्पादन पर जोर देना होगा, जो कि भोजन बनाम ईंधन संघर्ष से भी बचना है उन्होंने स्पष्ट चीनी को जगह कच्ची चीनी के उत्पादन पर भी जोर दिया, जो न केवल मानव उपभोग के लिए स्वास्थ्यप्रद है बल्कि उसके उत्पादन प्रक्रिया में अने वाली लागत भी नियंत्रण में है

प्रोफेसर स्वाइन ने कहा कि चीनी उद्योग को चीनी को मांग और आपूर्ति को संतुलित करने और जैव-आधारित उत्पादों और हरित प्रौद्योगिकियों के लिए एक आशाजनक बेंच के रूप में अपने को दिखाने के लिए एक नए दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है। एफएमएस एसीएसएन के अध्यक्ष कपी सिंह ने संस्थान परिदृश्य में चीनी और उससे संबद्ध क्षेत्रों में सेमिनार के विषय को प्रासंगिकता और महत्व के बारे में बताया वरसं दत्त सुगर इंडस्ट्रीज के महाप्रबंधक संभागी के पाटिल ने कहा कि चीनी उद्योग को स्वच्छ हरित और नवीकरणीय

ऊर्जा के उत्पादन का प्रमुख बेंच है, भविष्य के लिए ईंधन और हाइड्रोजन का एक अच्छा संयोजित बेंच हो सकता है। प्रोफेसर एवं जैव रसायन विभाग प्रमुख डॉ. सीमा परेश ने कहा कि व्यावसायिक रूप से सिद्ध प्रौद्योगिकियाँ जैसे कि प्रति वर्ष लगभग 2 मिलियन मीट्रिक टन की चीनी का बायो-गैस/सीबीसी के उत्पादन के लिए फिल्टर केक का उपयोग जैव-ऊर्जा और चीनी कारखानों के राखस को बाँचने में एक वरदान साबित हो सकती है जो कि समय की मांग भी है। एफएमएस एसीएसएन के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक दिवेक वर्मा ने बायोमास को बाँचने के बजाय इसके इन्फोर्मि, उर्वरक, बायो-डिग्रेडेबल पॉलिमर, कार्बनिक रसायनों आदि के कुशल उपयोग के बारे में बताया एवं चीनी और अनाज आधारित आसवनी इकाइयों में बॉयलर के प्रतिस्थापन के रूप में

एफएमएस प्रौद्योगिकियों को लागू करने को संभावनाओं पर जोर दिया सेमिनार में ऊर्जा दक्षता से संबंधित भारतीय चीनी उद्योग में नवीनता विकास और अवसर, चीनी उद्योग से हरित हाइड्रोजन को प्राप्त, आधुनिक श्रृंखला और प्रक्रिया पैरामीटर अनुकूलन, प्राकृतिक फिल्टर चीनी को व्यवस्थित और जैव आधारित फिल्टर अर्ध-व्यवस्था आदि विषयों से संबंधित सात शोध पत्र प्रस्तुत किए गए। सेमिनार में एमके विवेक, अशोक गर्ग, संजय शंकर, दिनेश कुमार, डॉ. आर अनंतलक्ष्मी, डॉ. अशोक कुमार, श्री वीरेंद्र कुमार, डॉ. सुधाशु मोहन, श्री महेंद्र यादव, श्री वीपी सिंह, श्री के.के.डी. श्री ए.के. नंदा, श्री अमर सिंह और श्री अमित नेनी आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम के संयोजक एवं महाप्रबंधक आचार्य शर्करा अभियांत्रिकी, श्री अनूप कुमार कर्नौलिया द्वारा दी गई समापन टिप्पणी के साथ सेमिनार का समापन हुआ। एफएमएस एसीएसएन के महाप्रबंधक, श्री पीकेएस सिंह ने प्रतिभागियों को धन्यवाद ज्ञापित किया। (अखिलेश कुमार पांडे) मुख्य अधिकारक

सत्य का असर

सत्य का असर समाचार पत्र

01,05, 2024|jksingh,hardoi, gmail, com मोबाइल नंबर 9956834016

पत्रकार जितेंद्र सिंह पटेल / सत्य का असर समाचार पत्र

कानपुर एन एस आई में सेमिनार सफेद चीनी की जगह कच्ची चीनी मानव उपभोग के लिए स्वास्थ्यप्रद बल्कि उत्पादन प्रक्रिया में किफायती : निदेशक प्रो, डी स्वाइन

कानपुर राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में "जैव-ऊर्जा संसाधनों की योजना और अनुकूलन" विषय पर एक अखिल भारतीय सेमिनार का आयोजन



वर्षा पत्रकार जितेंद्र सिंह पटेल कानपुर राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में "जैव-ऊर्जा के लिए संसाधनों की योजना और अनुकूलन" विषय पर एक अखिल भारतीय सेमिनार का आयोजन संस्थान के प्रशिक्षण केंद्र 'शर्करा सोध' में 30 अप्रैल, 2024 को किया गया। यह कार्यक्रम संयुक्त रूप से राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर, एफएमएस एसीएसएन और सुगर केन टेक्नोलॉजिस्ट्स लखनऊ और एफ डी इंजीनियरिंग डिवाइसिंग लिमिटेड के सहयोग से आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत संस्थान के निदेशक प्रोफेसर डी. स्वाइन और मंच पर उपस्थित अन्य गणमान्य व्यक्तियों द्वारा दीप प्रज्वलन और मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण के साथ की गई। इस सेमिनार में भारत के प्रमुख चीनी उत्पादक राज्यों में स्थित चीनी मिलों और आसवनी इकाइयों में कार्यरत कार्यकारी अध्यक्ष, मुख्य कार्यकारी अधिकारियों, महाप्रबंधकों और वरिष्ठ स्तर के अधिकारियों ने भाग लिया। सेमिनार के उद्घाटन सत्र में राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के निदेशक प्रोफेसर डी. स्वाइन, वरसं दत्त सुगर इंडस्ट्रीज के महाप्रबंधक संभागी के पाटिल, प्रोफेसर एवं जैव रसायन विभाग प्रमुख डॉ. सीमा परेश, एफएमएस एसीएसएन और सुगर केन टेक्नोलॉजिस्ट के अध्यक्ष कपी सिंह, एफ डी इंजीनियरिंग डिवाइसिंग लिमिटेड के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक दिवेक वर्मा और एफएमएस एसीएसएन और सुगर केन टेक्नोलॉजिस्ट के महाप्रबंधक पीकेएस सिंह ने संबं धित किया। सेमिनार को संबोधित करते हुए निदेशक, प्रो. डी. स्वाइन ने कहा कि केवल चीनी उद्योग से प्राप्त फीडबैक और अनाज का उपयोग करके, पैटिल में लक्षित 20% इन्फोर्मि मिशन 2025 तक प्राप्त नहीं किया जा सकता है। निर्धारित मात्रा में इंधनता को आवश्यकता को पूर्ण हेतु गैर-खाद्य फीडबैक से इंधनता उत्पादन पर जोर देना होगा, जो कि भोजन बनाम ईंधन संघर्ष से भी बचना है। उन्होंने स्पष्ट चीनी की जगह कच्ची चीनी के उत्पादन पर भी जोर दिया, जो न केवल मानव उपभोग के लिए

स्वास्थ्यप्रद है बल्कि उसके उत्पादन प्रक्रिया में अने वाली लागत भी किफायती है। प्रो. स्वाइन ने कहा कि चीनी उद्योग को चीनी की मांग और आपूर्ति को संतुलित करने और जैव-आधारित उत्पादों और हरित प्रौद्योगिकियों के लिए एक आशाजनक बेंच के रूप में अपने को दिखाने के लिए एक नए दृष्टिकोण अपनाना आवश्यक है। एफएमएस एसीएसएन के अध्यक्ष श्री के.पी. सिंह ने वर्तमान परिदृश्य में चीनी और उससे संबद्ध क्षेत्रों में सेमिनार के विषय की प्रासंगिकता और महत्व के बारे में बताया। वरसं दत्त सुगर इंडस्ट्रीज के महाप्रबंधक, श्री संभागी के पाटिल ने कहा कि चीनी उद्योग, जो स्वच्छ, हरित और नवीकरणीय ऊर्जा के उत्पादन का प्रमुख बेंच है, भविष्य के लिए ईंधन और हाइड्रोजन का एक अच्छा संयोजित बेंच हो सकता है। प्रोफेसर एवं जैव रसायन विभाग प्रमुख, डॉ. सीमा परेश ने कहा कि व्यावसायिक रूप से सिद्ध प्रौद्योगिकियाँ जैसे कि प्रति वर्ष लगभग 2 मिलियन मीट्रिक टन की चीनी का बायो-गैस/सीबीसी के उत्पादन के लिए फिल्टर केक का उपयोग जैव-ऊर्जा और चीनी कारखानों के राखस को बाँचने में एक वरदान साबित हो सकती है जो कि समय की मांग भी है। एफएमएस एसीएसएन के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक दिवेक वर्मा ने बायोमास को बाँचने के बजाय इसके इन्फोर्मि, उर्वरक, बायो-डिग्रेडेबल पॉलिमर, कार्बनिक रसायनों आदि के कुशल उपयोग के बारे में बताया एवं चीनी और अनाज आधारित आसवनी इकाइयों में बॉयलर के प्रतिस्थापन के रूप में एफएमएस प्रौद्योगिकियों को लागू करने की संभावनाओं पर जोर दिया। सेमिनार में ऊर्जा दक्षता से संबंधित भारतीय चीनी उद्योग में नवीनता विकास और अवसर, चीनी उद्योग से हरित हाइड्रोजन की क्षमता, आधुनिक श्रृंखला और प्रक्रिया पैरामीटर अनुकूलन, प्राकृतिक फिल्टर चीनी की व्यवस्थित और जैव आधारित टिकाऊ अर्ध-व्यवस्था आदि विषयों से संबंधित सात शोध पत्र प्रस्तुत किए गए। सेमिनार में एमके विवेक, अशोक गर्ग, संजय शंकर, दिनेश कुमार, डॉ. आर अनंतलक्ष्मी, डॉ. अशोक कुमार, श्री वीरेंद्र कुमार, डॉ. सुधाशु मोहन, श्री महेंद्र यादव, श्री वीपी सिंह, श्री के.के.डी. श्री ए.के. नंदा, श्री अमर सिंह और श्री अमित नेनी आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम के संयोजक एवं महाप्रबंधक आचार्य शर्करा अभियांत्रिकी, श्री अनूप कुमार कर्नौलिया द्वारा दी गई समापन टिप्पणी के साथ सेमिनार का समापन हुआ। एफएमएस एसीएसएन के महाप्रबंधक, श्री पीकेएस सिंह ने प्रतिभागियों को धन्यवाद ज्ञापित किया। (अखिलेश कुमार पांडे) मुख्य अधिकारक



Save as Draft

सहारा टूडे

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में सेमिनार का हुआ आयोजन

अशोक शर्मा, संवादकर्ता

कानपुर नगर, राष्ट्रीय शर्करा संस्थान कानपुर में जीव ऊर्जा के लिए संसाधनों की योजना और अनुकूलन विषय पर एक अखिल भारतीय सेमिनार कार्यक्रम का आयोजन मंगलवार को संस्थान के प्रशिक्षण केंद्र में संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम का उद्देश्य संयुक्त रूप से राष्ट्रीय शर्करा संस्थान कानपुर एशियन एसोसिएशन का शुगर केन टेक्नोलॉजिस्ट कार्यक्रम की शुरुआत संस्थान के निदेशक प्रोफेसर मंच पर उपस्थित एन गडगान्य व्यक्ति द्वारा दीप प्रज्वलन करने के उपरान्त सेमिनार का आयोजन प्रारंभ किया गया। इस अवसर पर मुख्य कार्यकारी अधिकारियों महाप्रबंधकों और वरिष्ठ स्तर के



अधिकारियों ने भाग लिया। सेमिनार में ऊर्जा दक्षता से संबंधित भारतीय चीनी उद्योग के नवीनतम विकास और अवसर चीनी उद्योग से हरित हाइड्रोजन की क्षमता आपूर्ति क्षमता और प्रक्रिया पैरामीटर अनुकूलन प्राकृतिक क्रिस्टल चीनी और जीव-आधारित टिकाऊ

अर्थव्यवस्था आदि विषयों पर संबंधित शोध प्रस्तुत किए गए। इस अवसर पर सुभाषु मोहन, महेंद्र यादव, अशोक गर्ग, संजय चौहान, विनय कुमार, अशोक कुमार, ज्योति कुमार, सलिल मोडिया प्रभारी अखिलेश पांडे प्रमुख रूप से मौजूद रहे।

दीनार टाइम्स

कानपुर न्यूज

DGT दीनार टाइम्स

कानपुर, मंगलवार, 30 अप्रैल 2024

25

एन एस आई में 'जैव-ऊर्जा के लिए संसाधनों की योजना और अनुकूलन' विषय पर सेमिनार



भविष्य में ग्रीन ईंधन के लिए हाइड्रोजन का एक अच्छा विकल्प

डी टी एन एन। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर में 'जैव-ऊर्जा के लिए संसाधनों की योजना और अनुकूलन' विषय पर एक अखिल भारतीय सेमिनार का आयोजन संस्थान के प्रशिक्षण केंद्र 'शर्करा रोप' में किया गया। यह कार्यक्रम संयुक्त रूप से राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर, एशियन एसोसिएशन ऑफ शुगर केन टेक्नोलॉजिस्ट, लखनऊ और एन एस आई द्वारा आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत संस्थान के निदेशक प्रोफेसर डी. स्वाईन और मंच पर उपस्थित अन्य गणमान्य व्यक्तियों द्वारा दीप प्रज्वलन और मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण के साथ की गई। इस सेमिनार में भारत के प्रमुख चीनी उत्पादक राज्यों में रियल चीनी मिल्स और आसानी इकाइयों में कार्यरत कार्यकारी अध्यक्षों, मुख्य कार्यकारी अधिकारियों, महाप्रबंधकों और वरिष्ठ स्तर के अधिकारियों ने भाग लिया। सेमिनार के उद्घाटन सत्र में राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के निदेशक प्रोफेसर डी. स्वाईन, वसंतदादा शुगर इस्टीमेट के महानिदेशक संभाजी के पाटिल, प्रोफेसर एच जी रस्तगन विभाजन प्रमुख डॉ. सीमा परोहा, एशियन एसोसिएशन ऑफ शुगर केन टेक्नोलॉजिस्ट के अध्यक्ष के पी सिंह, एन एस आई के महाप्रबंधक डॉ. अशोक वर्मा और एशियन एसोसिएशन ऑफ शुगर केन टेक्नोलॉजिस्ट के महासंस्थापक पी के एस सिंह ने मंच साझा किया।

सेमिनार को संबोधित करते हुए निदेशक, पी. डी. स्वाईन ने कहा कि केवल चीनी उद्योग से प्राप्त फीडस्टॉक और अनाज का उपयोग करके, पेट्रोल में लक्षित 26 लाख इक्विवलेंट मिश्रण 2025 तक प्राप्त नहीं किया जा सकता है। निर्धारित मात्रा में इथेनॉल की आवश्यकता की पूर्ति हेतु गैर-आज फीडस्टॉक से इथेनॉल उत्पादन पर जोर देना होगा, जो कि भोजन बनाम ईंधन संघर्ष से भी बचाता है। उन्होंने शर्करा चीनी की जगह काफ़ी चीनी के उत्पादन पर भी जोर दिया, जो न केवल मानव उपभोग के लिए स्वास्थ्यप्रद है बल्कि उसके उत्पादन प्रक्रिया में आने वाली लागत भी कम करता है। पी. स्वाईन ने कहा कि चीनी उद्योग को चीनी की मांग और आपूर्ति को संतुलित करने और जैव-आधारित उत्पादों और हरित प्रौद्योगिकियों के लिए एक आशाजनक केंद्र के रूप में उभरने की दिशा में सतर्क रहना होगा। अपने स्वागत भाषण के दौरान एसोसिएशन के अध्यक्ष के पी सिंह ने वर्तमान परिदृश्य में चीनी और उसके संबंधित क्षेत्रों में सेमिनार के विषय की प्रासंगिकता और महत्व के बारे में बताया। वसंतदादा शुगर इस्टीमेट के महानिदेशक, संभाजी के पाटिल ने कहा कि चीनी उद्योग, जो स्वस्थ, सस्टेन और नवीकरणीय ऊर्जा के उत्पादन का प्रमुख केंद्र है, भविष्य के लिए ईंधन और हाइड्रोजन का एक अच्छा संभावित स्रोत हो सकता है। प्रोफेसर एच जी रस्तगन विभाजन प्रमुख, डॉ. सीमा परोहा ने कहा



कि व्यावसायिक रूप से सिंगल प्रौद्योगिकियों जैसे कि प्रति बर्ल लगभग 2 मिलियन मीट्रिक टन की सीमा तक बायो-गैस, सीबीजी के उत्पादन के लिए फिस्टर केक का उपयोग जैव-ऊर्जा और चीनी कारखानों के राजस्व को बढ़ाने में एक बरदान साबित हो सकती है, जो कि समय की मांग भी है। एसईआईएल के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक, विवेक वर्मा ने बायोमैस को बायोलैटर में जलाने के बजाय इसके इथेनॉल, अंतरक, बायो-फिस्टरल पॉलिमर, कार्बनिक रसायनों आदि के कुशल उपयोग के बारे में बताया एवं चीनी और अनाज आधारित आसानी इकाइयों में बायोलैटर के प्रतिस्थापन के रूप में एमसीआर प्रौद्योगिकियों को लागू करने की संभावनाओं पर जोर दिया। सेमीनार में ऊर्जा दक्षता से सम्बंधित भारतीय चीनी उद्योग में नवीनतम

विकास और अवसर, चीनी उद्योग से हरित हाइड्रोजन की क्षमता, आपूर्ति क्षमता और प्रक्रिया पैरामीटर अनुकूलन, प्राकृतिक क्रिस्टल चीनी की व्यवहार्यता और जैव आधारित टिकाऊ अर्थव्यवस्था आदि विषयों से संबंधित सार सौच पत्र प्रस्तुत किए गए। सेमीनार में एन के चिवेदी, अशोक गर्ग, संजय चौहान, विनय कुमार, डॉ. आर अनंतलक्ष्मी, डॉ. अशोक कुमार, बीरेंद्र कुमार, डॉ. सुभाषु मोहन, महेंद्र यादव, बीपी सिंह, के. कोडे, ए के नंदा, अमर सिंह और अनित नेगी आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम के संयोजक एवं आसानी आचार्य शर्करा अभियांत्रिकी, अनुप कुमार कर्जीअया द्वारा दी गई सम्मान पट्टियों के साथ सेमिनार का समापन हुआ। एसोसिएशन के महासंस्थापक, प्रोफेसर सिंह ने प्रतिभागियों को पन्थवाद हार्दिक धिपित किया।

जैव-ऊर्जा के लिए संसाधनों की योजना और अनुकूलन विषय पर सेमिनार का हुआ आयोजन

प्रकाश उदयनी, सच की अहमियत

कानपुर। राष्ट्रीय स्वामी संस्थान, कानपुर में जैव-ऊर्जा के लिए संसाधनों की योजना और अनुकूलन विषय पर एक अत्याधुनिक और महत्वपूर्ण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस सेमिनार में भारत के प्रमुख जैव-ऊर्जा विशेषज्ञों, प्रोफेसरों, डॉक्टरों और उद्योगियों की भागीदारी थी। कार्यक्रम का उद्देश्य जैव-ऊर्जा के उत्पादन और उपयोग को बढ़ावा देना और किसानों को इसके लाभों से अवगत करवाना है।



प्रो. डी. स्वाईन सेवानिवृत्त हुए, आज नये निदेशक पद का कार्यभार ग्रहण करेगी डॉ. सीमा परोहा



उपस्थित थे प्रो. डी. स्वाईन, डॉ. सीमा परोहा, डॉ. सुभाष मोहन, डॉ. महेन्द्र प्रसाद चौधरी, डॉ. अमित मिश्र और डॉ. अरुण कुमार

आज

कच्ची चीनी उत्पादन पर जोर, स्वास्थ्य के लिए उपयोगी

प्रो. डी. स्वाईन सेवानिवृत्त हुए, आज नये निदेशक पद का कार्यभार ग्रहण करेगी डॉ. सीमा परोहा

कानपुर, 30 अप्रैल। राष्ट्रीय स्वामी संस्थान के संसाधनों में आयोजित जैव-ऊर्जा के लिए संसाधनों की योजना और अनुकूलन विषय पर एक अत्याधुनिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।



इस सेमिनार में भारत के प्रमुख जैव-ऊर्जा विशेषज्ञों, प्रोफेसरों, डॉक्टरों और उद्योगियों की भागीदारी थी। कार्यक्रम का उद्देश्य जैव-ऊर्जा के उत्पादन और उपयोग को बढ़ावा देना और किसानों को इसके लाभों से अवगत करवाना है।

प्रो. डी. स्वाईन सेवानिवृत्त हुए, आज नये निदेशक पद का कार्यभार ग्रहण करेगी डॉ. सीमा परोहा। डॉ. सीमा परोहा को संस्थापित करने हुए संस्थान के निदेशक प्रो. डी. स्वाईन ने कहा कि केवल कच्ची चीनी से प्रायः फोस्फोरिक और अमोनिया का उपयोग करने, फोस्फोरिक में लौह 20 प्रतिशत उपेक्षणीय मिश्रण 2025 तक प्राप्त नहीं किया जा सकता है।

उपदेश टाइम्स

जैविक ऊर्जा संसाधनों की योजना अनुकूलन विषय पर राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में सेमिनार का आयोजन किया गया



कानपुर नगर उपदेश टाइम्स राष्ट्रीय शर्करा संस्थान कानपुर में जैव-ऊर्जा के लिए संसाधनों की योजना और अनुकूलन विषय पर एक अत्याधुनिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इस सेमिनार में भारत के प्रमुख जैव-ऊर्जा विशेषज्ञों, प्रोफेसरों, डॉक्टरों और उद्योगियों की भागीदारी थी। कार्यक्रम का उद्देश्य जैव-ऊर्जा के उत्पादन और उपयोग को बढ़ावा देना और किसानों को इसके लाभों से अवगत करवाना है।

प्रो. डी. स्वाईन सेवानिवृत्त हुए, आज नये निदेशक पद का कार्यभार ग्रहण करेगी डॉ. सीमा परोहा। डॉ. सीमा परोहा को संस्थापित करने हुए संस्थान के निदेशक प्रो. डी. स्वाईन ने कहा कि केवल कच्ची चीनी से प्रायः फोस्फोरिक और अमोनिया का उपयोग करने, फोस्फोरिक में लौह 20 प्रतिशत उपेक्षणीय मिश्रण 2025 तक प्राप्त नहीं किया जा सकता है।

